व्याकरण की घंटी

शारदा कुमारी*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 सुझाती है कि भाषा शिक्षण के अंतर्गत व्याकरणिक इकाइयों को संदर्भ के साथ जोड़कर पढ़ाया जाना चाहिए। 'संदर्भ में व्याकरण' से तात्पर्य है कि कक्षा में जिस विधा का भी पठन किया जा रहा हो या जिस प्रकार की भी चर्चा चल रही हो, उसी में से व्याकरणिक इकाई को लेकर उस पर समझ बनाई जाए। उदाहरण के तौर पर कक्षा में जल चक्र की प्रक्रिया समझाई जा रही है तो इस प्रक्रिया के अंतर्गत इस्तेमाल की जा रही शब्दाबली जल, हवा, बादल, पेड़, नदी, समुद्र आदि के माध्यम से व्याकरणिक इकाई संज्ञा के बारे में बताया जाए और विद्यार्थियों के साथ सवाल जवाब हों कि उनके इर्द-गिर्द और कौन से नाम वाले शब्द हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005* यह भी सुझाती है कि भिन्न-भिन्न विषयों को कला के किसी भी रूप से समावेशित कर पढाया जा सकता है। प्रस्तुत लेख प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली व्याकरणिक इकाइयों, जैसे–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि को कला के भिन्न-भिन्न स्वरूपों जैसे दृश्य एवं मंचन आदि के साथ समेकित कर पढाने के अनुभवों पर प्रकाश डालता है। इस लेख में उदाहरण सहित उल्लेख किया गया है किस प्रकार से व्याकरणिक इकाई को बच्चों के संदर्भ से लिया जाए और फिर कला के किसी भी स्वरूप के साथ समन्वित कर उसकी समझ बनाई जाए।

अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या का नवीनीकरण हुए न जाने कितना अर्सा हो गया है जिसमें 'विद्यालय अनुभव कार्यक्रम' की बात कही गई है, पर प्रचलन अब भी *टीचिंग प्रैक्टिस* का ही है। आज मैं दक्षिणी दिल्ली के सर्वोदय विद्यालय की कक्षा तीन में बैठी हूँ। मेरे विद्यार्थियों को अभी कक्षा का आवंटन नहीं हुआ है क्योंकि उनसे इस विद्यालय के सभागार को सजाने का कार्य लिया जा रहा है। अब मैं क्या करूँ। सोचा यहाँ की नियमित कक्षाओं का ही अवलोकन कर लेती हूँ।

हालाँकि घंटी बजे हुए देर हो गई है, पर कक्षा में अध्यापिका अभी तक पहुँची नहीं हैं। अध्यापिका की अनुपस्थिति में भीतर जाऊँ या न जाऊँ, अभी इस पसोपेश में थी ही कि वे आ पहुँची। एकदम चुस्त-दुरुस्त, पढ़ाने को एकदम बेताब-सी दिख रही थीं, पहले की पहचान काम आई और कक्षा में प्रविष्टि के लिए किसी तरह की कठिनाई नहीं हुई। जैसा कि मैंने पहले ही कहा कि वे पढ़ाई करवाने के लिए एकदम बेचैन-सी नज़र आ रही थीं, सो आते

**प्राचार्य*, मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली 110022

© NCERT not to be republished

ही श्यामपट्ट पर बीच में लिखा 'विशेषण' और बोलीं आज तुम्हें, 'विशेषण' करवाती हूँ। मालूम है तुम्हें विशेषण क्या होते हैं?

सभी बच्चे चुप हैं।

लग ही नहीं रहा कि ये वही कक्षा है जहाँ कुछ क्षण पहले मेले जैसी रौनक थी।

हाँ भई, बोलते क्यों नहीं कुछ। क्यों शेफाली, तुम्हें तो पक्का पता होगा। तुम्हें नहीं पता तो फिर किसको पता होगा? चलो कोई नहीं, निकालो सब अपनी-अपनी कॉपी और लिखो।

बच्चे पूरी बात सुन एवं समझ पाए या नहीं, इस बात की परवाह किए बगैर अध्यापिका श्यामपट्ट पर लिखने लगीं— जो शब्द संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं, जैसे कि..., लिखते-लिखते वे पलट कर बोलीं, "अभी तुम्हारी कॉपी-पेंसिल तक नहीं निकली और मैंने पूरी परिभाषा तक लिख दी है।"

कुछ और फुर्तीले भाव से कक्षा में कभी इधर तो कभी उधर जाते हुए बोलीं, "निकाल भई, कॉपी निकाल, और तुम! तुम क्या सोच रहे हो? कॉपी लाए कि नहीं लाए ..."

कहते-कहते फुर्ती से फिर वे श्यामपट्ट पर जा पहुँची और उनके हाथ की चॉक श्यामपट्ट पर फिसलने लगी। उदाहरण—

— सीता की साड़ी पीली है।
— हनुमान की गदा विशाल है।
— अशोक वाटिका सुंदर है।
— गंगा पवित्र नदी है।
— शेर जंगली जानवर है।

पाँचों वाक्य लिखने के बाद वे बच्चों की तरफ मुड़ीं और समझाने के लहज़े में बोली, "देखो, ये मैंने पाँच वाक्य लिखे हैं न, हर वाक्य में किसी न किसी शब्द को मैंने 'रेखांकित' किया है। तो इन रेखांकित शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। समझ में आया इन्हें क्या कहते हैं?"

'विशेषण'! समूची कक्षा से एक साथ कोरस गान हुआ।

"वेरी गुड, अब आप ये सब कॉपी में नोट करें, फिर मैं आपको एक वर्कशीट करने के लिए दूँगी।" यह कहते-कहते अध्यापिका मेरे पास आईं। उन्होंने मुझे कागज़ों का बड़ा-सा पुलिंदा पकड़ाया और बोलीं— "मैम! देखिए, मैंने कई सारी वर्कशीट डेवलप की हैं। कुछ के तो मैंने पीपीटी भी डेवलप किए हैं। आप देख रही हैं न! हमारी सारी कक्षाएँ स्मार्ट क्लास हो गई हैं तो हमें हर रोज़ एक पीपीटी तो देनी ही देनी है। आप प्लीज! इन वर्कशीट पर अपने कुछ सजेशन दीजिए न! बहुत मेहनत की है मैंने इन पर।"

ठीक चार दिन बाद इसी कक्षा में मेरी प्रशिक्षणार्थी बतौर प्रशिक्षु अध्यापक मौजूद है। आज वह 'विशेषण' पढ़ा रही है। हालाँकि अध्यापक ने उसे बता दिया है कि संज्ञा, सर्वनाम ये सब वे कवर कर चुकी हैं। पर इस प्रशिक्षु अध्यापक से मेरा अनुरोध था कि कक्षा में मेलजोल, मस्ती हो जाने के बाद शुरुआत किसी कहानी और फिर विशेषण से ही की जाए। सो आज की कक्षा पुनः 'विशेषण' के नाम। आइए, आप भी अवलोकन करें।

उल्लास भरे अभिवादन के बाद बच्चों को सादे कागज़ वितरित किए गए। मॉनीटरनुमा विद्यार्थियों ने इस कार्य में भरपूर मदद की। अब उन्हें कहा गया कि अपने-अपने मन में बहुत सी चीज़ों के नाम सोचो। तुम्हें जो भी चीज़ सुंदर लगती है, अच्छी लगती है, उसका चित्र इस कागज़ पर बनाओ।

© NCERT not to be republished

अनुरोधनुमा निर्देश सुनकर तो बच्चे निहाल ही हो गए। कुछेक के तो ज्यॉमिट्री बॉक्स खुलने लगे चटर-पटर-चर और सोचे-समझे बिना उनकी पेंसिलें उस सादे कागज़ पर थिरकने लगीं और कुछ विद्यार्थी सवालों की झड़ी लगाए आगे तक आ पहुँचे—

— मैम जी! मैम जी! इस तरफ बनाऊँ कि दूसरी तरफ? (पन्ना उलट-पुलट कर दिखाते हुए)

— मैम जी! ऊपर की तरफ बना लूँ?

— मैम जी! मेरे को नहीं आती ड्राइंग।

(गर्दन से सटाते हुए, सकुचाहट के बोझ तले स्वयं को दबाते हुए)

— मैम जी! साइकिल का पहिया बना लूँ?

— मैम जी! कलर भी करना है?

— मैम जी! आप ऐसा रोज़ करवाओगे? (बहुत ही खुश होते हुए)

— मैम! मेरा पन्ना बाकी बच्चों से छोटा है।

— मैम जी! मेरा पन्ना यहाँ से फट गया है।

— मैम जी! शमसी को कुछ भी सोचना नहीं आता। उसका पन्ना मैं ही ले लूँ।

— मैम जी! फिर क्या करवाओगे आप? (पन्ने को अपनी बगल में सहेजते हुए)

सवाल थे कि कोशी नदी की बाढ़। जो भी हो तीस मिनट के बाद हर बच्चे के पास पन्ना था और उस पन्ने पर बनायी हुई एक तस्वीर, उनकी मनपसंद चीज़ की तस्वीर।

कक्षा के पिछले दरवाज़े के पास बैठी श्यामली से शुरुआत हुई यह बताने की, कि किसने क्या बनाया है? तो सूची कुछ इस प्रकार थी—

तुलसी मैया	लट्टू
जलेबी	कमल का फूल
पतंग	माचिस
तितली	चिड़िया
साइकिल का पहिया	बस
कछुआ	झंडा
लाल बत्ती	हाथी
आम	झोपड़ी
पेड़	जोकर

लिटिल टॉमी (कुत्ते के चित्र के साथ यह शीर्षक लिखा था)

'पतंग' और 'झंडे' की तो बहुत ही आवृत्ति हुई। लगभग 16 लड़के-लड़कियों ने 'पतंग' और 22 लड़के-लड़कियों ने 'झंडे' का चित्र बनाया था।

अपने इस नितांत मौलिक सृजनात्मक कार्य के बाद बच्चों में होड़ थी कि वे प्रशिक्षु अध्यापक को दिखाएँ, यद्यपि कुछेक बच्चे अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति को टकटकी लगाकर देख रहे थे। सभी बच्चों से उनकी कलाकृति ले ली गई और उनसे कहा गया कि देखो इस बंडल में से मैं एक चित्र निकालूँगी आँख मींचकर और फिर उसको सब मिलकर देखेंगे। कक्षा के मध्य में बैठी लड़की को आगे बुलवाकर, आँख मिचवाकर एक कागज़ निकलवाया गया। कागज़ पर बना था— 'साइकिल का पहिया'। प्रशिक्षु अध्यापक ने पहले वहीं से, फिर आगे-पीछे, इधर-उधर जाकर सब बच्चों को 'साइकिल का पहिया' दिखाया। जिस बच्चे की यह चित्रकारी थी, वह तो नाचे जा रहा था, मेरा पहिया, मेरा पहिया, मेरा पहिया, वाह जी वाह, मेरा पहिया।'

प्रशिक्षु अध्यापक ने उसके सिर पर हल्की-सी धौल जमाई, 'बेबी, अभी सबके चित्रों की बारी आएगी।'

© NCERT not to be republished

फिर उसने समूची कक्षा में उद्घोषणा की— देखो मेरे हाथ में है साइकिल के पहिए का चित्र।

पीछे से आवाज़ आई— 'समझ लो कि असली का पहिया।'

प्रशिक्षु अध्यापक ने भी सुर में सुर मिलाया और कहा, "हाँ जी, समझ लो कि असली का पहिया। अब तुम सबको इस पहिए की खास बात बतानी है। तुम सबको बताना है कि ये पहिया तुमको कैसा लग रहा है? यानी कि तुम्हें इस पहिए की कोई खास बात बतानी है। अब देखो इस पहिए के चित्र को मैं यहाँ बीचम-बीच लगा देती हूँ जिससे कि सबको दिखता रहे, और तुम सबको बताना है कि यह पहिया कैसा है, यानी कि कैसा लगता है" कहते-कहते प्रशिक्षु अध्यापक ने पहिए का चित्र फलेनल बोर्ड पर अटकाया गया और कुछ इस तरह से ऐसी जगह स्थापित किया गया कि बच्चों की निगाह उसपर जाती रहे।

बहुत से बच्चे उसके पास आ गए थे, कुछ छू रहे थे, कुछ सहला रहे थे, कुछ पेंसिल की नोंक से शेडिंग का प्रयास कर रहे थे।

प्रशिक्षु अध्यापक ने इस चेष्टा पर ऐतराज जताया और बोली कि देखो, मैंने तुमसे कहा न, कि हमें इस पहिए की खास बात के बारे में कोई शब्द बोलना है। फिर मेरी तरफ मुखातिब होते हुए बोली—"मैम शुरुआत आप से करते हैं। बोलिए, आपको कैसा लगता है ये पहिया?"

मैं समझ गई कि बच्चों को संकेत देना है तो मैंने थोड़ा-सा अभिनय करते हुए कहा—"मुझे तो यह पहिया गोल लगता है।"

"तो शारदा मैम को यह पहिया 'गोल' लगता है।" कहते हुए 'गोल' शब्द श्यामपट्ट पर लिख दिया गया। मुझसे 'गोल' का संकेत मिलते ही कई बच्चे चिल्लाए, हाँ मैम जी, पहिया गोल है गोल।

"और कैसा दिखता है तुम्हें यह पहिया?" प्रशिक्षु अध्यापक ने फिर से पहिए की आकृति की ओर संकेत करते हुए कहा।

आगे बैठे धीरज ने धीमे से कहा—"फुस्सू पहिया" 'गोल' के साथ 'फुस्सू' शब्द भी श्यामपट्ट पर दर्ज़ हो गया। और अब तो पहिए की खासियत बताने वाले शब्दों की झड़ी ही लग गई। श्यामपट्ट का दृश्य कुछ इस प्रकार का था—

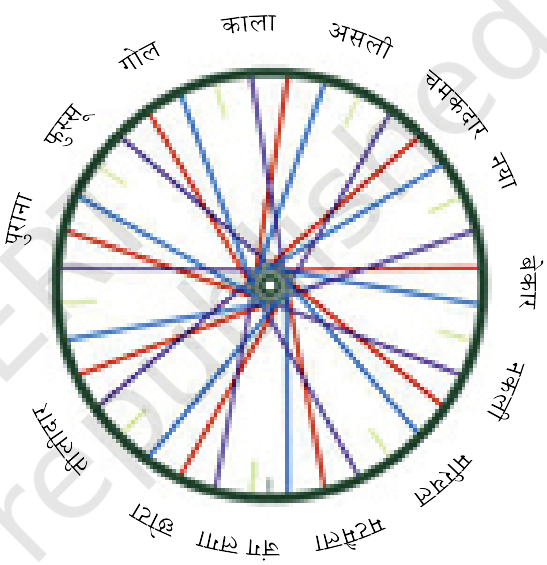

'पहिए' के लिए शब्द देने की जैसे होड़-सी मची थी।

एक बच्चे के मुँह से निकलता 'नकली पहिया' तो तुरंत दूसरे की आवाज़ आती—मैम, मैम, असली पहिया।

'अब शायद रोक लगनी चाहिए' यह सोचकर प्रशिक्षु अध्यापक ने अपनी चॉक की गति को विराम दिया और एक बार सभी शब्दों को दोहराया। फिर समझाया कि देखो, ये शब्द बताते हैं कि पहिया 'कैसा' है, तो किसी भी चीज़ की कोई खास बात हो—चाहे अच्छी वाली खास बात या बुरी बात

© NCERT not to be republished

वाली खास बात, कैसी भी खास बात हो— हम ऐसे शब्दों को विशेषण कहते हैं। अब अभ्यास के लिए एक और चित्र निकाला गया।

अब की बार 'चिड़िया' का चित्र हाथ लगा। पूरी प्रक्रिया दोहरायी गई, सवाल दोहराया गया और श्यामपट्ट पर नतीजा कुछ इस प्रकार से था—

सभी बच्चों के साथ शब्द दोहराए गए और समझाया गया कि कैसे ये शब्द चिड़िया की खास बात बता रहे हैं। ये खासियत, विशेष बात बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

बच्चों को उनकी चित्रकारी वापस कर दी गई और अपने-अपने चित्र पर 'एक विशेषण' लिखने एवं बोलने को कहा गया।

कुछ के उत्तर इस प्रकार हैं—

झोपड़ी	छतवाली, झब्बरदार
जलेबी	नारंगी, घुमरीली, रसीली
पेंसिल	लाल, नुकीली
तितली	सुंदर, चमकीली
कमल का फूल	गुलाबी, सॉफ़्ट

पतंग	सुंदर छबीली रंगीन कागज़ी पतली अकेली नोनी-नोनी जोगिया कटखन्नी जबरजोर

झंडा	तिरंगा सुंदर देशी लहरदार हरियाला सोन चिराग सरदारों का सरदार फहरेदार झंडा ऊँचा

सभी बच्चों ने चित्र पर अपने मन से शब्द लिखे और कक्षा में बोलकर सुनाया। किसी-किसी ने तो यह भी बताया कि उसने अपने चित्र को 'अमुक' शब्द से संबोधित क्यों किया है?

इस पूरी प्रक्रिया में 2 घंटे 46 मिनट लगे यानी कि 3 घंटा समझ लीजिए। तीन घंटे में देखिए तो कितने 'विशेषण' और विशेषण की समझ हासिल की गई। कक्षा अध्यापिका बहुत ही प्रभावित थीं

© NCERT not to be republished

परंतु संतुष्ट भी नहीं थीं। उनकी कुछ टिप्पणियाँ थीं जो मैं आपसे साझा कर रही हूँ—

1. बहुत ही 'टाइम कंज्यूमिंग' है। इतना समय यदि एक ही गतिविधि में लगेगा तो बाकी का सिलेबस कैसे कवर होगा?
2. कुछ बच्चे तो अजीब-अजीब से घरेलू शब्द बोल रहे थे, जैसे नोनी-नोनी, घुमरीली, ननकू चूँ-चूँ, इन्हें कैसे स्वीकार किया जा सकता है कक्षा में?
3. कुछ बच्चों ने अपने विशेषण इंग्लिश में दिए, जैसे— ब्राउन, सॉफ़्ट। यह तो हिंदी की कक्षा है, इसमें दूसरी, वह भी अँग्रेज़ी भाषा के शब्द कैसे लिए जा सकते हैं?
4. इतने सारे विशेषण जब कॉपी में आएँगे तो ज़रूरी तो नहीं कि हर बच्चा सही वर्तनी लिखे। जाँचने का कितना काम बढ़ जाएगा मैम, यह भी सोचा है आपने?
5. आफ़्टर ऑल, टाइम फ़ैक्टर इज़ मोर इम्पोर्टेंट। आपकी बच्ची तो ट्रेनी है और ये सब चोंचले ट्रेनिंग तक ही ठीक हैं।

साथियो, कक्षा अध्यापिका की टिप्पणियों से न तो मैं आहत हुई हूँ और न ही मेरे प्रशिक्षणार्थी हतोत्साहित हुए हैं। बच्चों के अनुभवों को शामिल करते हुए और कला समावेशित करते हुए व्याकरणिक अवधारणाओं को पढ़ाने-समझाने का सिलसिला जारी है।

इस दौरान एक बहुत ही रोमांचित कर देने वाला अनुभव हुआ। प्रशिक्षु अध्यापक ने सभी बच्चों को एक-एक चित्र देखने के लिए दिया। चित्र किसी पुस्तक से काटे गए थे। चित्र कुछ इस प्रकार से थे—

- कप प्लेट
- अनार
- भरी हुई बस
- सेल फोन
- ओखली
- स्त्री
- नल
- कुआँ
- गुड़िया
- ठेला, आदि

चित्रों की विषयवस्तु, छपाई आदि देखकर लग रहा था कि एक समय विशेष में वर्णमाला सिखाने वाले कायदे या चार्ट पेपर से ये चित्र काटे गए हैं। चित्रों की गुणवत्ता संदेह के दायरे में थी, फिर भी पहचाना जा पा रहा था कि अमुक चित्र लड़की का है या किसी अधेड़ स्त्री का, अनार का है या सेब का। ये सभी चित्र एक टोकरी में रख दिए गए और प्रशिक्षु अध्यापक ने बच्चों से कहा कि टोकरी में से एक-एक चित्र निकालें। उसे ध्यान से देखें और जिस वस्तु/जीव का चित्र है, उसकी पहचान करें। पहचान कर चित्र के नीचे उसका नाम लिख दें। साथ ही उसके लिए एक विशेषण भी लिखें। सभी बच्चों ने बहुत सुरुचिपूर्ण तरीके से अपने-अपने चित्र के लिए विशेषण और उस चित्र का नाम लिखा।

मैं दो चित्रों का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगी। एक बच्चे के पास जो चित्र आया था, उस पर 10–12 वर्ष की आयु वाली लड़की का चित्र था। बच्चे ने उसके नीचे लिखा 'यंगनी लड़की'। एक बच्चे के पास लोगों से भरी बस का चित्र आया था। उसने लिखा 'भरियल बस'। प्रशिक्षु अध्यापक ने मुझसे पूछना चाहा कि इन दोनों बच्चों को अंक दिए जाएँ क्या? सोचने-विचारने या अंक काटने की तो बात

© NCERT not to be republished

ही नहीं थी कहीं। उस बच्चे को तो बिना सिखाए ही व्याकरणिक अवधारणाओं की समझ थी।

देखिए, वह जानती-समझती थी कि किसी शब्द विशेष में 'नी' लगा देने से वह स्त्रीलिंग हो जाता है जैसे— कमल से कमलिनी, नौकर से नौकरानी, मास्टर से मास्टरनी आदि। इस तरह के प्रयोग उसने अपने घर, आस-पड़ोस एवं स्कूल में सुने होंगे और पढ़े भी होंगे। अब देखिए कितनी खूबसूरती से उसने अपनी शब्द-संपदा में से 'यंग' शब्द लेकर उसे 'यंगनी' बना दिया। क्या व्याकरण के प्रकांड से प्रकांड पंडित इस शब्द को गलत ठहराने का दुःसाहस कर सकते हैं? इसी प्रकार 'भरियल बस' के संदर्भ में 'भरियल' शब्द संभवत: बच्चे ने अड़ियल, भरियल आदि शब्दों के आधार पर इजाद किया होगा।

मुझे हैरानी होती है हर उस अध्यापक पर, जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों के अनुभवों व शब्द संपदा को साझा करने में कंजूसी करते हैं और इसे समय का अपव्यय मानते हैं। ऐसा न करके वे कितने बड़े खज़ाने से वंचित हो रहे हैं, वे नहीं जानते।

© NCERT not to be republished